WITWAVES
JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
Vol-2 Issue-1
(International Peer-Reviewed E-Journal)
(January 2025)

व्यंग्यकार रवींद्रनाथ त्यागी के काव्य में सौंदर्यानुभूति

आशीष कुमार तिवारी
सह प्राध्यापक-हिंदी विभाग
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर

शोध सार

रवीन्द्रनाथ त्यागी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनकी रचनाधर्मिता हास्य-व्यंग्य, कविता, उपन्यास, डायरी, आत्मकथा, यात्रा वृत्त, लघु कथा, ललित निबंध, समीक्षा तथा बाल साहित्य की विविध विधाओं में अपना प्रकाश बिखेरती है। यद्यपि उन्हें मान्यता-प्रतिष्ठा हास्य-व्यंग्य के क्षेत्र में ही एक अद्वितीय साहित्यकार के रूप में मिली, किन्तु बारंबार वे बलपूर्वक अपने पत्रों, आत्मलेखों, व्यंग्यों आदि में यह प्रस्थापित करते रहे कि उनकी मूल संवेदना कवि की है। इसीलिए वे कहते हैं कि उनके साहित्यकार का सही रूप समझने के लिए उनकी कविता में गहरे पैठना आवश्यक है। अपनी काव्य सामर्थ्य पर उन्हें पूरा विश्वास था कि वह अद्वितीय कोटि की है। उनकी कविता का गहन अध्ययन विश्लेषण स्पष्ट करता है कि उनकी कविता हिन्दी कविता में अपनी एक विशिष्ट पहचान रखती है। अपने समय के सर्वमान्य सुप्रतिष्ठित कवियों और कतिपय प्रसिद्ध आलोचकों के महत्त्वपूर्ण अभिमत भी इस कवि की कविता को वह गौरव क्यों नहीं दिला सके, जिसकी वह निर्विवाद रूप से अधिकारी थी, यह समीक्षा और साहित्यिक न्याय की बड़ी भारी विसंगति कही जा सकती है। उनके काव्य संग्रहों के प्रकाशन पर दो-एक छिटपुट समीक्षाएँ तो नामधारी हस्ताक्षरों ने लिखीं, पर समग्रता और व्यवस्थित रूप में उनके कवि का आकलन करने वाला एक भी गंभीर लेख दिखाई नहीं देता। वस्तुतः उनकी कविता का फलक क्षेत्र बहुत व्यापक है,इस शोध पत्र में यहीं दर्शाने का हमने प्रयास किया है।

बीज शब्द

हस्ताक्षर, गम्भीर, सौन्दर्य, प्राकृतिक सुषमा, प्रतीति, अभिव्यक्ति।

शोध विस्तार

रवीन्द्र नाथ त्यागी की कविता में प्रेम और सौंदर्य की अभिव्यक्ति अंकुठ भाव से अत्यंत उद्दात रूप में हुई है वे अपने अंतिम काव्य संग्रह अंतिम समय तक प्राकृतिक सुषमा और नारी सौन्दर्य

के प्रति चित में जो ललक भाव निरंतर रखे हुए थे, उसका बेझिझक स्वीकार इस रूप में कवि त्यागी जी ने किया है -

"उम्र क्या वास्तव में छीन सकेगी
रूप के प्रति मेरा अदम्य मोह
लाज से लाल गुलाब
क्या सचमुच हो जाएँगी अनुभव से चुप- चाप?
राजकुमार जैसे सजे उस रास्ते से
फिर क्या नहीं लौट पाऊँगा कभी?
नहीं नहीं नहीं ऐसा कभी नहीं हो सकता
जिस दिन हो गया ऐसा
यह होगा मेरी मृत्यु का अंतिम दिन।"[1]

वे अपने प्रेम की स्वीकृति जिस रूप में करते हैं उसमें न कोई झिझक है और न ही कोई अपराध बोध, न दुराव छिपाव का कोई छदम। अपने प्रेम की अभिव्यकित के लिए वे जिन बिम्बों, उपमानों, प्रतीको आदि की सर्जन करते हैं बहुत अधिक सांद्र और प्रभावी हैं। वे प्रेम में जिस पुलक और उत्फुल्लता का अनुभव करते हैं उसे अपने पाठक तक पूरी तरह संप्रेषित करते हैं -

कोयल कूजी,
रति की ऋतु आई।
मुझे आज,अनायास
किसी की याद, फिर आई।
चाँद शरमाया, कली मुस्काई।"[2]

(सूखे और हरे पते)
मात्र 'फिर आई इन दो शब्दों से यह प्रतीति दी गई है कि यह याद कभी भी मरी नहीं है, नहीं रह रहकर वह स्मृति में आती रही। जीवन के जागतिक धंधो में प्रेम की राख तले दबी चिंगारी कभी बुझ नहीं पाई है निरंतर अपनी उपस्थिति का बोध कराती है। कल की शाम में शाम को मानवीकृत कर उस प्रेम का अहसास कराया गया है –

"यह वही शाम थी,
जो बरसों पहिले
मुझसे एक बार कहीं मिली थी
किसी होटल में वा स्टेशन पर
तब भी वह इतनी उदास थी
संजीदा थी
कुछ खो गया था उसका
और मेरा भी।"[3]

करि अपने प्रेम का राज इतनी अंतरंग है कि सचमुच वह अपने किसी दोस्त से हृदय से बातें कर रहा है। पुरानी कसक तो है पर इस कसक में ऐसी दीवानगी नहीं है कि वह दुनिया में सब कुछ भूलकर प्रेम का ही होकर रह गया हो यह प्रेम जीवन का है जीवन के बीच रहकर किया गया है जहाँ जमाने के और गमों के साथ इस गम को भी दिल में छिपा कर रखते हुए कभी कभी उमड़ आ जाने वाली बदली की तरह इसके रस में पूरी तरह भींग गया है। किसी पुराने दोस्त से मुलाकात में उसका जिक्र इस रूप में हुआ है -

"और वह
तन्नी श्यामा शिखर दशना
क्या बातें करते हो तुम भी
भूले नहीं पुरानी शरारते।
कुछ दिनों तक पता रहा उनका
फिर उन्होंने शहर ही छोड़ दिया
हाँ, ठीक कहते हो
अच्छा दिल भोली शक्ल
वह चाँदनी उतर गई
अब दोपहर है धूप तेज है
आओ बरामदे में बैठे
वहीं चाय पिएँ।"[4]

इस प्रेम में यदि मिलन के मधुरतम क्षणों का स्मरण भी है तो कवि कविता को देह स्तर पर नहीं उतरने देता। देह सुख का चित्रण स्थूल स्तर पर नहीं अपितु ऐसे बिम्बों और प्रतीकों में करता है कि उसमें प्रेम की दिव्यत्ता भासित होने लगती है। कदाचित श्रेष्ठ प्रेम कविता का सबसे बड़ा गुण यही है। अपने व्यंग्यों में वे मले ही देह की चर्चा यदा-कदा स्थूलता के स्तर पर करते रहे हो. किन्तु कविता में यह पूर्णतः एक अतीन्द्रियता का बोध देते हैं -

"एक दिन
प्राची के तट पर
उषा का स्वर्णिम रथ
क्षण भर को रुका था
एक बार
चाँद की फैली बाँहों में
दिशाओं के आँगन में
रात बंधी थी।
बरसों पहिले
एक दिन
मैंने उसे पहिली बार देखा था।"[5]

(कल्पवृक्ष)

त्यागी जी ने प्रेम सौन्दर्य के अमर महाकवि कालिदास को पढ़ा भर ही नहीं था बल्कि उनका गहरा प्रभाव उनकी कविता पर लक्षित किया जा सकता है। इसलिए उनके यहाँ प्रेम की अभिव्यक्ति अपनी प्रगल्भता में भी निर्लज्ज नहीं हो पाती है –

"डोनियों की साँझ की तरह
मेरे हृदय के क्षितिज पर तुम्हारी याद आज फिर आई
आमों के पेड तले
जुड़े अधरों के- गुथी बाँहों के
कल्पित चित्र आँखों में फिर उतरे।"6.

(कल्पवृक्ष)

इंगिति में शरीर सुख की बात भी इतनी सहजता से त्यागी का कवि करता है कि उद्यान क्षणों को भी कामुकता या अश्लीलत्व में नहीं डलने देता। उसकी यह कारीगरी कभी वसंत, कभी चाँदनी कमी बर्फ की बूंदों तो कभी बिलकुल सीधे सीधे जीवन चर्चा के विविध क्रियाकलापों के माध्यम

से अभिव्यक्ति दी है। मिलन क्षणों की पूर्णता को ऐसे सांद्र विन्बों में है कि उसमें सृष्टि का समस्त सुख और वैभव, की सारी कमनीयता खिल उठती है और यह प्रेम एक उदात्त भाव से भर देता है, कवि और पाठक दोनों को -

"तुम्हारी देह में मैं देखता था बसंत के पलाश
भाद्रपद की वर्षा और कार्तिक का चाँद
चैत्र की पकी फरलें और सोने की धूप
तुम्हारी देह को देखकर ही
सबसे पहले जागा था मेरा यह शरीर।"[7]

(सलीब से नाव तक)

इन बिम्बों से कवि जिस प्रेम को अभिव्यक्ति देता है, वह दिव्यता के बोध से अनुप्राणित है। स्मृतियों में बसी प्रिया का नेह निमंत्रण जीवन और जगत के क्रिया कलापों, आपाधापी में स्वीकार न कर पाने की पीडा कवि को बार-बार सालती है। प्रिया के साथ मनचीता समय व्यतीत न कर पाने का दश उनकी कविताओं में बार बार विभिन्न रूपों में अभिव्यक्ति पाता है। वह ऐसा लगता है मानो जिन्दगी का सत निचुड गया हो, वसंत घायल सौंप सा फुफकार रहा हो, पर साथ ही वासंती वातावरण में प्रेम का वैभवपूर्ण उल्लास छलक पड़ता है। सौन्दर्य के प्रति कवि अपने आकर्षण को किसी कुंठा भाव से नहीं जीता, अपितु वह उसकी स्पष्ट और बेबाक अभिव्यक्ति में यकीन रखता है।

रवीन्द्रनाथ त्यागी ने 'मुंशी प्रेमचन्द की शताब्दी', 'आओ जगन मेरे वर्य तुम साहित्यकार बनो..', 'डायरी के पन्ने, 'बीच का आदमी', 'हिन्दी साहित्य में मुझे क्या ज्यादा प्रिय है?' शीर्षक रचनाओं में भी साहित्यकारों की आर्थिक विपन्नताओं को अभिव्यक्ति दी है। एक अफसर होने के नाते रवीन्द्रनाथ त्यागी ने अफसरशाही, अफसरों की अकर्मण्यता, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, लालफीताशाही, अफसरों के दौरे और उनके द्वारा आश्रयदाताओं की जी-हुजूरी करना आदि बातों पर प्रत्यक्ष व्यंग्य किया है। डॉ.जगदीश गुप्त ने उनकी साफगोई की विशेषता को सराहते हुए लिखा है कि, "रवीन्द्रनाथ त्यागी स्वभाव से जिन्दादिल, विनयी परन्तु साफगोई पसन्द, भीतरी सच्चाई को पकड़ने की कोशिश करने वाले व्यक्ति हैं।" प्रायः विद्वानों ने उनकी रचनाओं में लालित्य के प्राधान्य को स्वीकार किया है। स्वयं रवीन्द्रनाथ त्यागी हरिशंकर परसाई एवं शरद जोशी की रचनाओं से अपनी रचनाओं की तुलना करते हुए मानते हैं कि, "परसाई राजनीतिक

सामाजिक सुधारक हैं, जोशी और श्रीलाल शुक्ल बड़े शिल्पकार हैं और मेरी प्रवृत्ति साहित्य और लालित्य की ओर है, यद्यपि राजनीतिक-सामाजिक व्यंग्य मैंने भी लिखे हैं।

निष्कर्ष

रवीन्द्रनाथ त्यागी अपने युग के सूक्ष्म निरीक्षक और युग द्रष्टा हैं। उनके साहित्य के आईने में तत्कालीन समाज की मूल्यहीनता, अनाचार, आर्थिक वैषम्य, खोखले आदर्श, थोथी धार्मिकता परिव्याप्त है। उनका साहित्य इन सब का मूक दर्शक नहीं है। वह इन विद्रूपताओं पर चोट करता है। जो लोग साहित्यकार को एक अच्छे मनुष्य के रूप में देखना और जानना चाहते हैं, उन्हें त्यागीजी को निकटता से देखना और जानना चाहिए। रवीन्द्रनाथ त्यागी व्यंग्यत्रयी के एक महत्त्वपूर्ण व्यंग्यकार और एक सशक्त कवि हैं, जिनका अपना वैशिष्ट्य है। हिन्दी व्यंग्य के पितामह हरिशंकर परसाई, रवीन्द्रनाथ त्यागी के समग्र साहित्य को दृष्टि में रखकर लिखते हैं कि "मैं रवीन्द्रनाथ त्यागी को एक श्रेष्ठ कवि और एक श्रेष्ठ व्यंग्यकार भूमि स्वीकार करता हूँ। रवींद्रनाथ त्यागी की रचनाएँ समकालीन विसंगतियों का बोध कराती हुई साहित्य को एक नया मुहावरा प्रदान करती हैं। उनका साहित्य हिन्दी साहित्य की अमूल्य थाती है। रवीन्द्रनाथ त्यागी ने शिष्ट व्यंग्य लेखन के साथ साथ अपनी प्रतिभा और बौद्धिकता के सहारे हास्य-व्यंग्य की नींव डाली है।

संदर्भ सूची

1. सूखे और हरे पत्ते/रवीन्द्र नाथ त्यागी/भारती भंडार,प्रयाग।
2. कल्पवृक्ष/रवीन्द्र नाथ त्यागी/राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. आदिम राग/रवीन्द्र नाथ त्यागी/राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. सलीब से नाव तक/रवीन्द्र नाथ त्यागी/पराग प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. कृष्णपक्ष की पूर्णिमा/रवीन्द्र नाथ त्यागी/किताबघर, नई दिल्ली।
6. पराजित पीढ़ी के नाम/रवीन्द्र नाथ त्यागी/पराग प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. देवदार का पेड़/रवीन्द्र नाथ त्यागी/नेशनल पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली।